मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 8 अगस्त 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

निजामुद्दीन, दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी 2
18वाँ दिल्ली पुस्तक मेला सितंबर में 2
एनबीटी का स्थापना दिवस मनाया गया 3
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन 3
पखोवाल जिला लुधियाना और फरीदकोट में पुस्तक लोकार्पण, साहित्यिक कार्यक्रम और पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन 4-5
बच्चों के लिए स्कूल-पूर्व पुस्तकें विकसित करने हेतु चित्रकार कार्यशाला का आयोजन 5
पुस्तक समीक्षा 6
18वाँ सियोल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 7
हाजीपुर में कथावाचन एवं लेखक से संवाद 7
'मुद्रा का संसार' का राँची में लोकार्पण 7
आगामी पुस्तक मेले 8
'रिबेलियन 1857' के कन्नड़ अनुवादक को पुरस्कार 8
चिट्ठीघर 8

विश्व पुस्तक मेला अब हर साल

पुस्तकप्रेमियों, लेखकों, प्रकाशकों के लिए खुशखबरी! 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के उद्घाटन-अवसर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल की घोषणा के आलोक में नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा आयोजित किया जाने वाला द्विवार्षिक नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला अब से सालाना आयोजन होगा। अब अगला, यानी **21वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 4 से 10 फरवरी, 2013** की अवधि में आयोजित होगा।

विदित हो कि देश में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने और प्रकाशन उद्योग के बढ़ते व्यवसाय को ध्यान में रखते हुए दो साल की जगह हर साल विश्व पुस्तक मेले के आयोजन की माँग की जा रही थी। विश्व के अनेक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले, यथा–फ्रैंकफर्ट, बीजिंग, मॉस्को, दुबई, शारजाह आदि भी सालाना आयोजन ही हैं।

'आज के भारत में पुस्तक एवं पठन'

दिल्ली में नेशनल बुक ट्रस्ट स्थापना दिवस व्याख्यान

डॉ. शशि थरूर व्याख्यान देते हुए; साथ में बैठे हैं ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर

''शब्दों का आनंद मेरे लिए कोई अपरिचित अनुभव नहीं है। मैं भरपूर पढ़ता हूँ। यह महत्वपूर्ण है कि हम आनंद के लिए पढ़ें। किताबों का मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है।'' नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के 55वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर प्रख्यात लेखक और सांसद डॉ. शशि थरूर ने यह कहा। वे 1 अगस्त, 2012 को नई दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब सभागार में 'आज के भारत में पुस्तकें एवं पठन' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

एक लेखक के रूप में अपने विकास पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जब वे मात्र आठ वर्ष के थे तभी से लिखना शुरू कर दिया था और जब वे 12 वर्ष के हुए तब उनकी पहली किताब छपी। उन्होंने कहा कि एक लेखक के रूप में मेरे विकास में मेरे माता-पिता का बड़ा हाथ है, जिन्होंने मुझे काफी प्रोत्साहित किया।

उन्होंने आज पुस्तक उद्योग में बढ़ रहे प्रतियोगिता को रेखांकित करते हुए प्रकाशकों से आह्वान किया कि वे आज के युवाओं के पसंद के अनुकूल लोकप्रिय गद्य साहित्य का प्रकाशन करें। उन्होंने लोगों, विशेषकर युवा लोगों में पठन आदत को मन में बैठाने की चुनौतियों के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि युवाओं को पढ़ाई के प्रति प्रयास करना होगा।

डॉ. थरूर ने एनबीटी के अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के अनुवाद के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ''भाषा एक माध्यम है, न कि गंतव्य।'' उन्होंने कहा कि किताबों का समाज पर प्रभाव पड़ता ही पड़ता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में सचिव (उच्चतर शिक्षा) श्री अशोक ठाकुर, आईएएस ने समारोह की अध्यक्षता की।

इससे पूर्व, ट्रस्ट-निदेशक श्री एम. ए. सिकंदर ने उपस्थित अतिथियों, पुस्तकप्रेमियों का स्वागत किया।

विदित हो कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने अपनी स्थापना के 55वें वर्ष से वार्षिक व्याख्यान शृंखला के आयोजन की पहल की है जिसमें प्रकाशन की दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान करने वाले प्रख्यात विद्वान, बुद्धिजीवी, साहित्यिक व्यक्तित्व तथा ऐसे ही अन्य व्यक्तित्वों को आमंत्रित किया जाएगा। यह उम्मीद की जाती है कि ऐसी शृंखला के आयोजन से पुस्तक एवं पठन के महत्व और प्रोन्नयन पर लोगों के बीच एक सार्थक माहौल बनेगा और इसे एक व्यापक सराहना मिल सकेगी। डॉ. शशि थरूर का व्याख्यान इसी शृंखला में पहला कार्यक्रम था।

ट्रस्ट के परिचय पर आधारित पुस्तिका के लोकार्पण का दृश्य : बाएँ से, श्री एम.ए. सिकंदर, डॉ. शशि थरूर, श्री अशोक ठाकुर

निजामुद्दीन, दिल्ली में पुस्तक प्रदर्शनी

कार्यक्रम के उद्घाटन का एक दृश्य

पुलिस का पठन-पाठन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व के प्रति अपनी निष्ठा को दर्शाने का एक अनूठा अवसर था निजामुद्दीन, दिल्ली का पुस्तक प्रदर्शनी। 17 से 19 जुलाई, 2012 तक उर्स महल, निजामुद्दीन में आयोजित इस तीन दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में समाज के पीड़ित व वंचित तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के बीच पुस्तक पठन आदत को बढ़ावा देने तथा उन तक पुस्तकें पहुँचाने के नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के मकसद के प्रति दिल्ली पुलिस ने हाथ मिलाकर अपने सामाजिक दायित्व का बखूबी निर्वाह किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दिल्ली पुलिस आयुक्त श्री नीरज कुमार, आईपीएस ने सांसद माननीय श्री संदीप दीक्षित की गरिमामयी उपस्थिति में किया। इस अवसर पर ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर, दिल्ली पुलिस के अनेक वरिष्ठ अधिकारी, हजरत निजामुद्दीन दरगाह के निजामी सदस्य एवं बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी उपस्थित थे। क्रिकेट खिलाड़ी अजय जडेजा तथा NDTV की बरखा दत्त दर्शक दीर्घा में देखी गईं।

आम लोगों तक पहुँचने के दिल्ली पुलिस के प्रयास पर पुलिस आयुक्त श्री नीरज कुमार ने कहा, ''कम्यूनिटी पुलिसिंग (समाज तक पहुँचने के पुलिस के प्रयास) की अवधारणा को आम आदमी तक पहुँचाने के उद्देश्य से हमने इस तरह की पहल की है। जन संपर्क कार्यक्रम के तहत हम आम लोगों से उनके घर जाकर मिलेंगे, उन्हें सुनेंगे, उनसे बात करेंगे और उनकी शिकायतों का निपटारा करेंगे।''

ट्रस्ट की पुस्तकों का अवलोकन करते पुलिस आयुक्त

इस अवसर पर श्री संदीप दीक्षित ने अपने संबोधन में ईमेल और इंटरनेट जैसी नई प्रविधियों के आगमन को पुस्तक के लिए खतरा न मानकर इन प्रौद्योगिकियों को पुस्तकों के अनुकूल विकसित करने का आह्वान किया। ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने हालिया दुबई प्रवास का जिक्र करते हुए कहा कि ''दुबई के मेरे हाल की यात्रा में मैंने देखा कि कम्यूनिटी पुलिसिंग के एक भाग के रूप में वहाँ की स्थानीय पुलिस ने वहाँ एक पुस्तक मेला का आयोजन किया था। दिल्ली पुलिस के नए आयुक्त श्री नीरज कुमार के नेतृत्व में दिल्ली पुलिस द्वारा दिल्ली में इसी तरह की यह पहल काफी अच्छी है। दिल्ली पुलिस के सहयोग से दिल्ली के अन्य भागों में भी निकट भविष्य में हम कुछ और कार्यक्रम करेंगे।''

पुस्तक प्रदर्शनी के दौरान बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रम और गतिविधियों का भी आयोजन किया गया। गैर-सरकारी संस्थाओं और स्कूल, यथा–साक्षी, एमसीडी प्राइमरी स्कूल, श्रीराम स्कूल ऑफ गुड़गाँव, एमसीडी प्रतिभा विद्यालय, दिल्ली पब्लिक स्कूल–गाजियाबाद, आगा खान फाउंडेशन तथा नवजागृति कलेक्टिव के 150 से अधिक बच्चे इनमें भागीदार हुए। स्कूली बच्चों के लिए यह अवसर कथा-कहानी सुनने का एक अनुपम अवसर साबित हुआ। दो युवा कथावाचकों ने गालिब एकेडमी में बच्चों को कथावाचन के माध्यम से भरपूर आनंद प्रदान किया। ये कथावाचक थीं–सुश्री चारु सेठी तथा सुश्री पवन गुलेरिया। दक्षिण-पूर्व जिला के पुलिस आयुक्त श्री अजय चौधरी ने बच्चों के साथ संवाद किया और उनसे अपने अनुभव और विचार साझा किए।

पुस्तकों के प्रति महिला पुलिसकर्मियों ने भी गहरी रुचि दिखाई

नृत्य और अभिनय के द्वारा कहानी की प्रस्तुति पर एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इनमें 200 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। भरतनाट्यम की प्रख्यात नृत्यांगना सुश्री बनानी सरकार ने इसे संचालित किया। बच्चों ने टैगोर की कृति *पोस्ट ऑफिस* के दृश्यों को अभिनीत किया।

पुस्तक प्रदर्शनी में मुस्लिम समुदाय तथा महिलाओं ने विशेष रुचि ली। बड़ी संख्या में इनके प्रदर्शनी में आने से प्रदर्शनी को एक विशिष्ट रूप मिला। झुग्गी-झोंपड़ियों तथा वंचित तबके के बच्चे भी बड़ी संख्या में प्रदर्शनी देखने पहुँचे। पुस्तकों के प्रति इनका लगाव इनके प्रफुल्लित चेहरों को देखकर सहज ही लग रहा था।

इस प्रदर्शनी में ने.बु.ट्र. के अलावा कुछ अन्य संस्थाओं के भी स्टॉल लगे थे। ये थीं–साहित्य अकादेमी, नेशनल बाल भवन, गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज, गालिब अकादमी, आगा खान फाउंडेशन आदि। ट्रस्ट के साथ-साथ अन्य संस्थाओं की भी पुस्तकों की यहाँ अच्छी बिक्री हुई। प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में पुस्तकप्रेमी आए।

ट्रस्ट की ओर से इस प्रदर्शनी के प्रभारी तथा समन्वयक ट्रस्ट में सहायक निदेशक श्री राकेश कुमार थे।

18वाँ दिल्ली पुस्तक मेला सितंबर में

18वाँ दिल्ली पुस्तक मेला **1 से 9 सितंबर, 2012** की अवधि में नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान में आयोजित होने जा रहा है। द फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स के सहयोग से इंडिया ट्रेड प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन (ITPO) इस पुस्तक मेले को प्रगति मैदान में हॉल नं. 8 से 12ए तक आयोजित कर रहा है। पुस्तक मेला प्रातः 11 बजे से रात्रि 8 बजे तक चलेगा। वयस्कों के लिए प्रवेश शुल्क 20 रुपये तथा बच्चों के लिए 10 रुपये रखा गया है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के प्रकाशनों के लिए कृपया हॉल नं. 10 में पधारें।

एनबीटी का स्थापना दिवस मनाया गया

संबोधन करते हुए क्रमशः ट्रस्ट-अध्यक्ष एवं ट्रस्ट-निदेशक

"मुझे यह कहते हुए अपार खुशी हो रही है कि नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया आज अपना 55वाँ स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर मैं ट्रस्ट के अपने सभी सहकर्मियों को बधाई देता हूँ। ट्रस्ट पुस्तक पठन और प्रोन्नयन की दिशा में नए क्षितिज को छुएगा मैं इसकी कामना करता हूँ।" ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा ने ट्रस्ट के 55वें स्थापना दिवस समारोह में यह कहा।

ट्रस्ट सभागार में संपन्न इस समारोह में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने भी अपने विचार साझा किए। उन्होंने उपस्थित सभी ट्रस्टकर्मियों को ट्रस्ट के 55वें स्थापना दिवस पर बधाई देते हुए कहा, "55 साल की हो गई हमारी संस्था। गर्व होना चाहिए हम सबको। मैं आप सबको बधाई देता हूँ।" ट्रस्ट-निदेशक ने अपने भावप्रवण और सारगर्भित संबोधन में ट्रस्ट के उद्देश्यों को रेखांकित किया और इन उद्देश्यों की प्राप्ति में अपने समस्त सहकर्मियों का सहयोग माँगा। "ट्रस्ट की हर उपलब्धि में आप सबका हाथ है। हमें एक इकाई के रूप में एक साथ, मिलजुलकर और आपसी समन्वय से काम करना चाहिए। संस्था के विकास में ही हम सबका भी विकास है, भला है। हम सब एक-दूसरे से अपने विचार और ज्ञान साझा करें। तभी हम और आगे बढ़ पाएँगे, तरक्की कर पाएँगे।" विदित हो कि ट्रस्ट की स्थापना 1 अगस्त, 1957 को पुस्तक प्रोन्नयन के उद्देश्य से की गई थी। ट्रस्ट की स्थापना देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के स्वप्न का प्रतिफल है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन

प्रारंभ

गंगाधर गाडगिल; अनु. : हेमा जावडेकर

पृ. 540 ` 360

मूल मराठी का अनुवाद। इस उपन्यास में मुंबई नगरी की स्थापत्य की कहानी के साथ उस समय में आधुनिक समाज की नींव रखने वाले नाना साहब, माउंट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन और जमशेठ जी जीजीभाई आदि के महान कार्यों का जीवंत वर्णन है, जिन्होंने इस शहर को तराशा और उसे मूर्त रूप प्रदान किया।

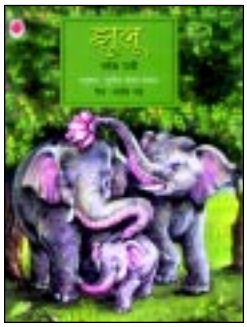

झुलू; *रमेश पत्री*

अनु. : सुनील केशव देवधर; चित्र : आशीष पांडे

पृ. 46 ` 25

झुलू एक हाथी का नाम है जिसे पागल समझकर मार डालने की माँग हो रही थी। पर डॉक्टर ने समझाया कि मातृभूमि से दूर होने के कारण उसमें मातृभाषा की तड़प है इसलिए लोग उसे पागल समझ रहे हैं। जानवर भी मातृभाषा से प्यार करते हैं, एक कारुणिक कहानी।

पानी बरसने वाला है

विनायक; चित्र : पुलक बिश्वास

पृ. 48 ` 55

एक शेर अपने ही जंगल में अनाथ-सा हो गया। वह खुद को यतीम महसूस कर रहा था। जाड़े के दिनों की वर्षा शुरू होते ही शेर अपने परिवार सहित जंगल की ओर बढ़ चला। भालू के लाख रोकने पर भी नहीं रुका। एक करुण कथा, जिसे पढ़कर आँखें भर आएँ।

इंदिरा प्रियदर्शिनी

मनोरमा ज़फ़ा; चित्र : बोधराज

पृ. 72 ` 30

देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी, जिन्हें इंदिरा प्रियदर्शिनी के नाम से भी जानते हैं, की जीवनी पुस्तक है यह। लेखिका ने इंदिरा जी के जीवन के कई दुर्लभ प्रसंगों का भी पुस्तक में उल्लेख किया है।

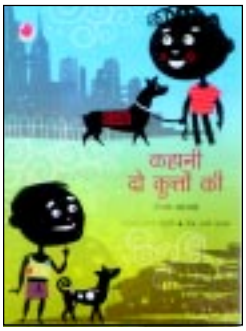

कहानी दो कुत्तों की

दीपक प्रहराज; चित्र : आर्य प्रहराज

पृ. 20 ` 30

एक अमीर और एक गरीब लड़के के पास एक-एक कुत्ता है। अमीर का कुत्ता कई करतबें जानता है, गरीब का कोई करतब नहीं जानता। एक रात अमीर के घर चोर घुस आए और चोरी करके जाने लगे, पर गरीब के कुत्ते ने भौंक-भौंककर सबको सचेत किया। चोर का क्या हुआ, पढ़िए यह पुस्तक।

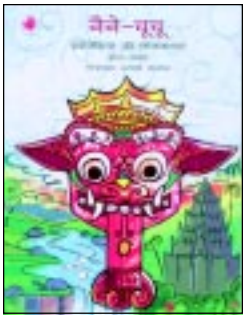

नैने-चूचू (इंडोनेशिया की लोककथाएँ)**;** *प्रीता व्यास; चित्र : इरशाद कप्तान;* पृ. 112 ` 115

एशियाई देश इंडोनेशिया की 21 लोककथाएँ शामिल हैं इस पुस्तक में। दरअसल, किसी देश का चरित्र जानना चाहें तो आपको उसकी संस्कृति, विशेषतः वहाँ की लोक संस्कृति से परिचित होना चाहिए। इन लोककथाओं को पढ़कर इंडोनेशिया के मूल चरित्र को समझा जा सकता है।

पखोवाल जिला लुधियाना और फरीदकोट में पुस्तक लोकार्पण, साहित्यिक कार्यक्रम और पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

बाएँ से दाएँ–डॉ. बलदेव सिंह बद्दन, महेंदर सिंह मानूपुरी, प्रो. बावा सिंह, सिमर सदोष, भगवंत रसूलपुरी, अवतार सिंह रैना, हरीश मौद्गिल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से पंजाबी साहित्य सभा पखोवाल और भाई कन्हैया जी वेलफेयर सोसायटी पखोवाल के सहयोग से 13 अप्रैल, 2012 को पखोवाल लाइब्रेरी में एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस साहित्यिक समागम की अध्यक्षता प्रो. बावा सिंह ने की। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य सभा पखोवाल के अध्यक्ष श्री हरीश मोदगिल ने सभा की गतिविधियों और भाई कन्हैया जी वेलफेयर सोसायटी के कार्यक्रमों की विस्तार सहित चर्चा की। ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने ट्रस्ट के प्रकाशनों, पुस्तक मेलों, पुस्तक परिक्रमा और संगोष्ठियों के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर प्रो. बावा सिंह ने ट्रस्ट की ओर से देश में पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए ट्रस्ट के ओर से किए जा रहे प्रयत्नों की प्रशंसा की। प्रो. बावा ने कहा कि पुस्तक संस्कृति के विकास में माता-पिता, अध्यापकों और राजनीतिक आंदोलनों की भी अहम भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि पंजाब में पुस्तक पढ़ने वालों की संख्या कम है परंतु ट्रस्ट की ओर से जो पुस्तक मेले, पुस्तक परिक्रमा, पुस्तक लोकार्पण और संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं उससे पुस्तक संस्कृति के विकास को गति मिलती है। इस अवसर पर श्री सिमर संतोष, श्री प्रेम अवतार रैना और मास्टर गुरमोहन सिंह ने भी विचार प्रकाट किए।

पुस्तकप्रेमियों की भीड़

कार्यक्रम के आरंभ में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित 6 पंजाबी पुस्तकें मंचासीन बुद्धिजीवियों की ओर से लोकार्पित की गईं। पुस्तकें हैं–*जैनेंद्र कुमार दियाँ तिन बाल कहानियाँ* (लेखक : जैनेंद्र कुमार, अनु. : प्रकाश कौर संधू); *इक दिन* (लेखक : जगदीश जोशी, अनु. : चरणजीत सिंह चंन); *सारी दुनिया प्यारी दुनिया* (लेखक : जयंती मनोकरण, अनु. : चरणजीत सिंह चंन); *इक यात्रा* (लेखक : जगदीश जोशी, अनु. : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'); *नन्हा बबलू अते परीयाँ* (लेखक : नवनीता देव सेन, अनु. : डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन'); *हंकार दी हार* (लेखक : योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', अनु. : भूपिंदर सिंह बेदी)। इन पुस्तकों पर पंजाबी के प्रसिद्ध कहानीकार और त्रैमासिक पत्रिका 'कहानीधारा' के संपादक भगवंत रसूलपुरी ने पर्चा प्रस्तुत किया।

'पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर श्री हरीश मोदगिल और महेंद्र सिंह मानूपुरी ने विचार प्रकट किए। इसके बाद कवि दरबार का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पंजाबी और उर्दू के प्रसिद्ध कवि सरदार पंछी ने की। श्री बलबीर परवाना विशेष अतिथि के तौर पर उपस्थित हुए। इस कवि दरबार में श्री भगवान ढिल्लों, श्री हरीकृष्ण मायर, तेजिंद्र वाज, सोमपाल हीरा, सुखबिंदर नीर, सरदार पंछी, सरवनजीत सवी, गुरचरण कौर कोचर, त्रैलोचन लोची, बलबीर परवाना, मास्टर जरनैल सिंह अचरवाल, दलजीत रायत, जसवीर जस्सा, रामप्रसाद, दीप दिलबर, मनिंदर सिंह धनोआ, स्वर्ण सिंह पल्ला, जसदेव लल्लों, शमशेर नूरपुरी, जसपिंद्र रुपाल, महेंद्र मानूपुरी, प्रो. बावा सिंह, सुरजीत सिंह आर्टिसिट, प्रेम अवतार रैना और दर्शन सिंह कवियों ने भाग लिया। कवि दरबार का संचालन श्री शविंदर ने किया।

इस अवसर पर ट्रस्ट की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस पुस्तक प्रदर्शनी में लगभग एक लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई।

पुस्तक लोकार्पित करते हुए, बाएँ से दाएँ–डॉ. बलदेव सिंह बद्दन, श्री विर्क, खुशवंत बरगाढ़ी, के. एल. गर्ग, प्रो. ब्रह्म जगदीश सिंह, प्रो. जालौर सिंह खीवा, प्रिंसिपल गुरमीत सिंह डुडी

15 और 16 जुलाई, 2012 को सरकारी सीनियर सैंकेडरी स्कूल (लड़कियाँ) फरीदकोट में पीपल्स फोरम बरगाढ़ी के सहयोग से दो दिवसीय पुस्तक लोकार्पण, 'पाठकों में पठन रुचि में कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी और कवि दरबार का आयोजन किया गया। समागम के आरंभ में पीपल्स फोरम बरगाढ़ी के अध्यक्ष श्री खुशवंत बरगाढ़ी ने पीपल्स फोरम की ओर से पंजाब में आयोजित किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पंजाबी भाषा में पाठकों की कमी नहीं है बल्कि अच्छी पुस्तकों की कमी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि श्रेष्ठ पंजाबी पुस्तकें उचित कीमत पर सही ढंग से पाठकों तक पहुँचाई जानी चाहिए। लेखकों को नई पीढ़ी के सरोकारों का साहित्य सृजन की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक, डॉ. बलदेव सिंह 'बद्दन' ने ट्रस्ट की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि ट्रस्ट की ओर से पंजाब में आज तक 13 पुस्तक मेले लगाए गए हैं और 14वाँ बठिंडा पुस्तक मेला 29 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2012 के दौरान पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला के रीजनल सेंटर बठिंडा में लगाया जाएगा, जिसमें पंजाबी, हिंदी और अँग्रेजी के सौ के लगभग प्रकाशकों के भाग लेने की आशा है।

कार्यक्रम के आरंभ में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित 6 पंजाबी पुस्तकें मंचासीन बुद्धिजीवियों की ओर से लोकार्पित की गईं। ये पुस्तकें हैं–*राजकुमार ते मूंगियाँ दा टापू* (लेखक : दाईसाकू इकेदा, अनु. : डॉ. हरशिंदर कौर); *गोलू-गुडुप-गुडुप दास : हंगरी दियाँ लोक कथावाँ* (लेखक : प्रमोद कुमार शर्मा, अनु. : डॉ. रूपिंदर कौर); *क्ली टापू दी घटना* (लेखक : तनुका भौमिक एंडो, अनु. : गुरप्रेम लहरी); *शहीद अब्दुल हमीद* (लेखक : सैयद एहसान अली, अनु. : डॉ. चंद्रमोहन); *दादी अते जान दे दुश्मन : दो पाकिस्तानी कहानियाँ* (लेखक : हसन मंजर, अनु. : प्रो. मनप्रीत कौर सहोता); *आदमी अते परछावाँ ते होर कहानियाँ* (लेखक : राजीव तांबे, अनु. : सुखमिंदर सेखों)। लोकार्पित की गई पुस्तकों पर पंजाबी के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. ब्रह्म जगदीश सिंह ने पर्चा प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर 'पाठकों में पठन रुचि की कमी : समस्या और समाधान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में प्रो. जालौर सिंह खीवा और श्री खुशवंत

श्रोताओं का एक दृश्य

बरगाढ़ी ने विचार प्रकट किए। प्रो. खीवा ने कहा कि सरकारी सरपरस्ती के लालच की बजाय जन-सहयोग और संस्थागत कोशिशों के जरिए पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस अवसर पर स्कूल के प्रिंसिपल श्री गुरदीप सिंह ढुडी और परमजीत सिंह विर्क ने भी विचार प्रकट किए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पंजाबी के प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक श्री के.एल. गर्ग ने की।

इस अवसर पर कवि दरबार का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रो. लोकनाथ ने की। श्रीमती भूपिंदर कौर प्रीत और श्री हरमंदर सिंह कोहारवाला विशेष अतिथि के तौर पर शामिल हुए। इस कवि दरबार में निम्नांकित कवियों ने भाग लिया– हरमंदर सिंह कोहारवाला, नारायण सिंह मंघेडा, हरदम सिंह मान, प्रो. साधु सिंह, कुलविंदर विर्क, विजय विवेक, साधू सिंह चौहान, बेअंत गिल, सुनील चंदियाणवी, भूपिंदर कौर प्रीत, तरसेम, प्रो. लोकनाथ, सुरिंदरप्रीत घणींया, नवराही घुगियाणंवी, देवेंद्र सैफी, बलजिंदर भल्ला भारती, मनजिंदर कौर भल्ला, जसवीर भलूरिया, रणवीर राणा, पवन नाद, परमजीत सिंह विर्क, सुरजीत सिंह आर्टिसट, डॉ. सतीश ठुकराल सोनी, मनजीत पुरी तथा जगीर सधर।

इस अवसर पर 15 और 16 अप्रैल, 2012 को दो दिन के लिए ट्रस्ट की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें पौने दो लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई। समागम के अंत में पीपल्स फोरम के सचिव श्री राजपाल सिंह ने श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

ट्रस्ट की ओर से 6 से 24 जुलाई, 2012 के दौरान चंडीगढ़, समराला, जालंधर, लुधियाना, पखोवाल, मोगा, फरीदकोट, बठिंडा, कोटकपुरा और भैंणीवाल साहब में पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं जिसमें 4.50 लाख रुपये की पुस्तकों की बिक्री हुई।

बच्चों के लिए स्कूल-पूर्व पुस्तकें विकसित करने हेतु चित्रकार कार्यशाला का आयोजन

बच्चों, विशेषकर पाँच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए विशेष तौर पर चित्रमय पुस्तकों के विकास के उद्देश्य से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने एक अनोखे चित्रकार कार्यशाला का गोवा में आयोजन किया। 26 से 29 जून, 2012 की अवधि में आयोजित इस त्रिदिवसीय कार्यशाला में देश भर से वरिष्ठ चित्रकारों ने बच्चों की पुस्तकों के संबंध में अपने-अपने विचार साझा किए।

जिन चित्रकारों ने इस कार्यशाला में भागीदारी की, वे थे–रवि परांजपे, पुलक बिश्वास, शुद्धसत्त्व बसु, अतनु राय, पार्थ सेनगुप्ता, अनूप राय, जयंती मनोकरण, प्रिया नागराजन, अमिताभ सेनगुप्ता, देवव्रत घोष, रवींद्रनाथ साहू, सुबीर राय, शशि शेट्ये, विकी आर्य, दुर्लभ भट्टाचार्य, अजंता गुहाठाकुरता, समरेश चटर्जी, उत्पल तालुकदार, दुर्गादत्त पांडे, मोहित सुनेजा तथा इरशाद कप्तान। यह आयोजन गोवा के महान चित्रकार मारियो मिरांडा को श्रद्धांजलि स्वरूप था। मिरांडा ने ने.बु.ट्र. के लिए भी चित्र बनाए थे।

कार्यशाला में विकसित पुस्तकों को बच्चों की पुस्तकों के सबसे बड़े आयोजन, बोलोना अंतरराष्ट्रीय बाल पुस्तक मेला में प्रदर्शित करने हेतु ले जाना इस कार्यशाला का उद्देश्य था। विदित हो कि बोलोना पुस्तक मेला इटली में एक वार्षिक आयोजन है। इस कार्यशाला का उद्घाटन गोवा में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने 26 जून, 2012 को किया।

अपने संबोधन में श्री सिकंदर ने कहा कि नेहरू बाल पुस्तकालय पुस्तकमाला, जिसके अंतर्गत बाल पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, ट्रस्ट का सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकमाला है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों की कड़ी में यह पहला कार्यक्रम है। अब बच्चों के लिए पुस्तकों के विकास हेतु ऐसी अनेक कार्यशालाएँ होंगी। उन्होंने जानकारी दी कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला अब से वार्षिक आयोजन हो गया है। 21वाँ नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 4 से 10 फरवरी, 2013 की अवधि में होगा। इस बार पुस्तक मेले का थीम लोक एवं जनजातीय साहित्य रखा गया है।

उद्घाटन के बाद प्रख्यात चित्रकार रवि परांजपे तथा पुलक बिश्वास द्वारा लघु प्रस्तुतियाँ की गईं। गोवा में कार्यक्रम की समन्वयक, सुश्री नंदिनी साही भी इस अवसर पर

बोलीं। चित्रकारों को सहयोग देने एवं उनमें अवधारणा की साफ समझ के लिए प्रख्यात बाल लेखक रमेंद्र कुमार लगातार चित्रकारों के साथ बने रहे।

बच्चों की पुस्तकों को बेहतर ढंग से बनाने में अपने विचार एवं अवधारणा के स्तर पर सभी भागीदार चित्रकारों ने मनोयोगपूर्वक काम किया। कार्यशाला के अंतिम दिन प्रेस के सामने एक मीडिया प्रस्तुति की गई। ट्रस्ट की ओर से कार्यक्रम समन्वय में भागीदार थे–देवव्रत सरकार (उपनिदेशक, कला), नीरा जैन (संपादक) तथा पंकज चतुर्वेदी (हिंदी संपादक)।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पुस्तक समीक्षा

अस्सी घाट का बाँसुरी वाला (कविता संग्रह)
तजेन्दर सिंह लूथरा; पृ. 72 ` 150
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभषा मार्ग, नई दिल्ली-02
छोटी-छोटी चीजों से भी कविता निकल सकती है इसे इस संग्रह को पढ़ने के बाद समझा जा सकता है। संग्रह की कविताओं से गुजरते हुए यह साफ दीखता है कि कवि ने कहीं से भाषा उधार नहीं ली है; जो कुछ भी लिखा वह निज अनुभूति से निःसृत है। कच्चे शब्दों में रची-बसी अनुभूतियाँ मन को सहज ही अपनी ओर खींच लेती हैं। दरअसल, अनगढ़ता का भी अपना सौंदर्य होता है।

डेस्कटॉप (कहानी संग्रह)
रीता सिन्हा; पृ. 176 ` 250
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
भूमंडलीकरण से त्रस्त आम आदमी की पीड़ा और संत्रास लेखिका की कई कहानियों का मूल तत्व है। यह संग्रह केवल स्त्री पीड़ा का आख्यान न होकर मनुष्य मात्र की यंत्रणाओं का एक दस्तावेज-सा लगता है। बारह कहानियों से निर्मित यह संग्रह हमें हमारे आसपास और परिवेश को और बेहतर ढंग से समझने का आह्वान करता-सा दीखता है। सही है, चीजों को देखना और बात है, और पढ़ना कुछ और बात।

चाँद के पार (काव्य संग्रह)
संपा. : राज बुद्धिराजा, योशिओ तकाकुरा
पृ. 152 ` 350
वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-02
इस काव्य संग्रह में जापानी और हिंदी कवियों द्वारा रचित 'चंद्र-दर्शन' पर कुछ कविताएँ संकलित हैं। जापान में सितंबर या अक्तूबर माह में चंद्र-दर्शन के अवसर पर वहाँ के लोग चाँद की प्रशंसा में गीत गाते हैं, एक साथ बैठते, खाते और बतियाते हैं। विशिष्ट आस्वाद का यह द्विभाषी (हिंदी व जापानी) कविता संग्रह है।

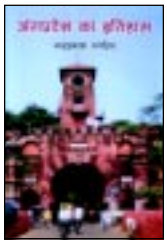

अंगप्रदेश का इतिहास
चंद्रप्रकाश जगप्रिय; पृ. 128 ` 200
निराली दुनिया पब्लिकेशंस, 358-ए, बाजार देहली गेट, दरियागंज, नई दिल्ली-02
आरक्षी सेवा के एक वरीय पदाधिकारी द्वारा लिखी गई यह कृति अंगप्रदेश के इतिहास को जानने-समझने की एक ईमानदार कोशिश है। पुस्तक 16 खंडों में विभाजित है। कृति की प्रायः सभी घटनाएँ या विषय स्वतंत्र होते हुए भी एक-दूसरे से संश्लिष्ट हैं। साहित्यिक पुट लिये हुए यह पुस्तक इतिहास एवं साहित्य का संश्लेषण-सा लगता है। विश्लेषण, चर्चा और अनुसंधान के लिए एक उपयोगी पुस्तक।

समाधिस्थ अक्षर (कविता संग्रह) (मूल नेपाली से अनूदित)
वीरभद्र कार्कीढोली; पृ. 120 ` 250
प्रकाशक : संचमान लिम्बू, गांतोक, पूर्व सिक्किम
मानवीय मूल्यों पर मर्यादा की पुनर्स्थापना का प्रयास करना किसी भी रचनाकार का उद्देश्य होता है। वैसे भी, केवल शब्द संचयन या शब्द क्रीड़ा से कविताएँ नहीं बनतीं। संग्रह में कविता के अनेक 'शेड्स' हैं। कविता में पहाड़ न हो यह तो संभव ही नहीं, क्योंकि रचनाकार पहाड़ से ही हैं।

मुझसे कैसा नेह (कहानी संग्रह)
अलका सिन्हा; पृ. 136 ` 200
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कविता और कहानी दोनों ही आँगनों में आवाजाही करतीं रचनाकार की कविताओं में कहीं तो गद्य की छाया दीखती है तो कहानियों में पद्य का आस्वाद मिलता है। बीस कहानियों के इस संग्रह में साधारण पुरुष और स्त्रियाँ ही कहानियों के मुख्य पात्र हैं जो इन कहानियों को विश्वसनीय बनाती हैं। स्त्री विमर्श के नाम पर स्त्री देह की नुमाइश से बचा गया है। अपने जीवन और परिवेश से जिंदा शब्द उठाकर इन कहानियों को रचा है लेखिका ने, इसलिए जीवंत लगती हैं ये कहानियाँ।

कही अनकही (स्त्री विमर्श)
कमल कुमार; पृ. 96 ` 10
बोधि प्रकाशन, एफ-77, सेक्टर-9, रोड नं 11, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
'भ्रम का आकाश और यथार्थ की जमीन' तथा 'प्रकृति के समीप स्त्रियाँ' शीर्षक दो खंडों से निर्मित कमल कुमार की यह पुस्तक स्त्री जीवन के विविध पक्षों एवं परतों की पड़ताल करती है। आधी आबादी का पूरा सच वही नहीं है जो हमारी नजर देखती है। दरअसल, 21वीं सदी में पहुँचकर भी आज स्त्री अपनी अस्मिता और पहचान की लड़ाई लड़ रही है। एक विचारोत्तेजक विमर्श, जिसे पढ़ना जरूरी लगता है।

सागर लहरें और भँवर (काव्य संग्रह)
प्रवेश धवन; पृ. 112 ` 140
मंजुली प्रकाशन, पी-4, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
कवयित्री प्रवेश के इस काव्य सृजन की विशेषता उनकी सहज और सरल भाषा है। संग्रह की कविताओं में रस है, भाव है और बोध है जो हमें झकझोरती हैं और सोचने के लिए मजबूर भी करती हैं। इन कविताओं में मानवीय संवेदना का उद्रेक है तो दार्शनिकता का संगुंफन भी।

प्यास लंबी हो गई (ग़ज़ल संग्रह); *शिवनंदन सिंह;* पृ. 80 ` 100
चतुरंग प्रकाशन, मेनकायन, न्यू कॉलोनी, उलाव, पो.-उलाव, जिला-बेगूसराय, बिहार
74 ग़ज़लों का यह संग्रह ग़ज़लप्रेमियों को रास आएगा। आम आदमी को केंद्र में रखकर लिखी गई इनकी ग़ज़लें आज के टूटते समाज और परिवार को बचाए रखने में औजार का काम करती हैं। ग़ज़लों में व्यंग्य के पैने तीर भी हैं जो उन्हें चुभते हैं जिन्हें चुभना चाहिए।

ककून (उपन्यास)
धर्मपाल साहिल; पृ. 392 ` 500
सुकीर्ति प्रकाशन, डी सी निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-136027, हरियाणा
रेशम के कीड़े का जो सुरक्षित घेरा होता है उसे 'ककून' कहते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह भी अपने चारों ओर नाते-रिश्तों का एक आवरण बनाता है ताकि इस 'ककून' में वह सुरक्षित रह सके। लेकिन रिश्तों में स्वार्थ के हथौड़े कई बार इस ककून को तोड़ देते हैं। आतंकवाद भी इस उपन्यास में एक मुख्य घटना के रूप में है।

18वाँ सियोल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल के कोएक्स (COEX) कंवेंशन सेंटर में 20 से 24 जून, 2012 तक आयोजित सियोल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला का उद्घाटन दक्षिण कोरिया के संस्कृति मंत्री द्वारा किया गया। दक्षिण कोरिया के साथ सऊदी अरब के राजनयिक संबंध के 50 वर्ष पूरे होने के नाते सऊदी अरब को इस पुस्तक मेले में विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान देकर आमंत्रित किया गया। इस पुस्तक मेले के 18वें आयोजन में 20 से अधिक देशों के 580 से अधिक प्रकाशकों ने भाग लिया। पुस्तक का आयोजन संस्कृति, खेल और पर्यटन मंत्रालय तथा कोरियन पब्लिशर्स फाउंडेशन के सहयोग से कोरियन पब्लिशर्स एसोसिएशन द्वारा किया गया।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने इस मेले में 26 भारतीय प्रकाशकों की 200 से अधिक पुस्तकों की एक सामूहिक प्रदर्शनी लगाया। इनमें विविध विधाओं और विषयों, यथा–सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, साहित्य, बाल पुस्तकें, कला एवं संस्कृति आदि की पुस्तकें शामिल थीं। इस अवसर पर थीम आधारित नेशनल बुक ट्रस्ट के तीन प्रतिलिप्यधिकार कैटलग प्रदर्शित किए गए। ये थे–महात्मा गाँधी पर तथा उनके द्वारा लिखित पुस्तकें, खेलकूद पर पुस्तकें तथा सिनेमा पर पुस्तकें। मेले में 21वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के आयोजन संबंधी सूचनात्मक प्रचार सामग्री का वितरण भी किया गया।

मुख्यतः कोरियाई भाषा की पुस्तकों का बाजार होने के बावजूद अमेरिका और ब्रिटेन से आयात की हुई थोड़ी-बहुत अँग्रेजी की पुस्तकें भी वहाँ थीं। एनबीटी की भागीदारी ने भारत में भी अँग्रेजी भाषा की पुस्तकों के बाजार की तलाश के संबंध में कोरियाई लोगों के नजरिये को बदला। वे जान गए कि अँग्रेजी पुस्तकों का बाजार केवल यूके, यूएस नहीं बल्कि भारत भी है। वहाँ प्रदर्शित पुस्तकों में उपनिषद, बौद्ध धर्म, गाँधी (इसके अंतर्गत बच्चों के लिए दो कॉमिक्स पुस्तकें भी थीं) तथा टैगोर पर पुस्तकें थीं। कोरियन पब्लिशर्स डायरेक्टरी के परिचय के अनुसार, निकट अतीत में कोई बहुत अधिक भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का कोरियाई भाषा में अनुवाद नहीं हुआ बल्कि इस मामले में यूरोप के देश, अमेरिका और तब चीन-जापान आगे हैं। उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रकाशक वहाँ के मजबूत और उच्च शिक्षित जनसंख्या को अपनी अनूदित पुस्तकों से आकर्षित कर सकते हैं।

पुस्तक मेले में प्रकाशन से संबंधित तथा साहित्य संबंधी अनेक कार्यक्रमों के आयोजन भी हुए तथा सम्मानित अतिथि देश ने भी कार्यक्रम किए। कुछ विशिष्ट प्रदर्शनियाँ भी मेले का भाग थीं जिनमें से एक नोबेल विजेताओं को समर्पित था, जिनमें रवींद्रनाथ टैगोर पर केंद्रित पैनल भी था। पुस्तक मेले के दो हॉल में से एक पूर्णतया बाल पुस्तकों के लिए समर्पित था। बाल पुस्तकों को समर्पित हॉल के मुख्य आकर्षण थे चित्रकारों का दीवार, बुक-आर्ट स्टॉल तथ दक्षिण कोरिया के कुछ वैसे पुरस्कार विजेता चित्रकारों के विशिष्ट चित्रों का प्रदर्शन जिन्होंने बोलोना बाल पुस्तक मेले में चित्रकारी के लिए पुरस्कार जीते थे। पुस्तकों की विषय-वस्तु और उत्पादन गुणवत्ता की दृष्टि से बेहद उम्दा थे। कुल मिलाकर, कोई कह सकता है कि वहाँ के लोग अपने बच्चों को सर्वोत्तम पठन सामग्री उपलब्ध कराने के प्रति बेहद सचेतन हैं, जो कि उस देश के प्रकाशन परिदृश्य में साफ परिलक्षित और प्रतिबिंबित होता है।

सियोल अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में ट्रस्ट का प्रतिनिधित्व ट्रस्ट में संपादक श्री कुमार विक्रम ने किया। श्री विक्रम ने दक्षिण कोरिया में भारत के राजदूत, महामहिम श्री विष्णु प्रकाश से मिलकर उन्हें ट्रस्ट की पुस्तकें भेंट कीं तथा उन्हें ट्रस्ट की गतिविधियों से अवगत कराया। श्री प्रकाश ने ट्रस्ट की गतिविधियों की जानकारी लेने में गहरी रुचि दिखाई तथा विदेशों में ट्रस्ट द्वारा पुस्तकोन्नयन के कार्य की सराहना की।

हाजीपुर में कथावाचन एवं लेखक से संवाद

'सृष्टि युवा एवं महिला मंडल' के सहयोग से हाजीपुर, बिहार में 9 एवं 10 जुलाई, 2012 को नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा कथावाचन, सृजनात्मक लेखन कार्यशाला एवं लेखक से संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पुस्तकोत्सव की शुरुआत 9 जुलाई को शिक्षक एवं शिक्षकों के प्रशिक्षणदाताओं के मध्य पुस्तक संस्कृति के प्रोन्नयन के उद्देश्य से रीडर्स क्लब अभियान पर पूर्वाभिमुखीकरण के साथ हुई। स्थानीय प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के लगभग सौ शिक्षक तथा जिला शिक्षा विभाग के अधिकारी, जिसमें श्री नवनाथ मिश्र, प्रखंड शिक्षा अधिकारी, हाजीपुर भी शामिल थे एवं कर्मचारी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। प्रख्यात बाल लेखक डॉ. श्रीप्रसाद, एकेडमिक स्टाफ कॉलेज, बीएचयू के प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, बाल लेखक डॉ. ब्रजनंदन प्रसाद वर्मा तथा ट्रस्ट में अँग्रेजी संपादक श्री द्विजेंद्र कुमार ने शिक्षकों से बच्चों के संपूर्ण विकास में पाठ्येतर पुस्तकों के महत्व पर बातचीत की। रीडर्स क्लब मूवमेंट कैसे पुस्तक एवं पठन के उद्देश्य का प्रोन्नयन कर सकती है इस पर भी विचार किया गया।

सत्र के दौरान जिले के 50 स्कूलों में रीडर्स क्लब की स्थापना की गई। लेखक से मिलिए सत्र में डॉ. श्रीप्रसाद तथा डॉ. ब्रजनंदन प्रसाद वर्मा ने कथावाचन एवं कविता पाठ किया जिसे श्रोताओं ने बेहद पसंद किया। 10 जुलाई को कथावाचन सत्र में बाल लेखकों के कथावाचन को श्रोताओं की अच्छी वाहवाही मिली। बाद में बच्चों ने भी कुछ कहानियाँ सुनाईं। सृजनात्मक लेखन कार्यशाला में हाजीपुर के विभिन्न स्कूलों के सौ से अधिक बच्चों ने भाग लिया। इसके बाद पुनः पठन सत्र हुआ। बाल कथावाचकों को पुरस्कारस्वरूप पुस्तकें दी गईं। कार्यशाला में तैयार कुछ कहानियों को चयनित किया गया जिसे रीडर्स क्लब बुलेटिन के आगामी अंक में शामिल किया जाएगा।

'मुद्रा का संसार' का राँची में लोकार्पण

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से विविध पुस्तकमाला के अंतर्गत हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'मुद्रा का संसार' का झारखंड के राज्यपाल महामहिम डॉ. सैयद अहमद ने लोकार्पण किया। राज्यपाल महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि यह पुस्तक हर पाठक वर्ग के लिए उपयोगी है। राँची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एल.एन. भगत ने कहा कि इसे हम क्वालिटी एजुकेशन का सुफल कह सकते हैं।

विदित हो कि इस पुस्तक को राँची के ही दो युवा लेखकों, स्वर्ण सुमन व अमिय आनंद, ने मिलकर लिखा है। पुस्तक में मुद्रा के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/08/2012

आगामी पुस्तक मेले

त्रिची पुस्तक मेला, तमिलनाडु	5-14 अक्तूबर, 2012
जयपुर पुस्तक मेला, राजस्थान	8-14 अक्तूबर, 2012
अलीगढ़ पुस्तक मेला, उत्तर प्रदेश	17-21 अक्तूबर, 2012
गोवा पुस्तक मेला, गोवा	3-11 नवंबर, 2012
कालीकट पुस्तक मेला, केरल	3-11 नवंबर, 2012
बठिंडा पुस्तक मेला, पंजाब	27 अक्तू. - 4 नवं., 2012
राष्ट्रीय पुस्तक मेला, पटना, बिहार	दिसंबर 2012
कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	15-12 दिसंबर, 2012
तिरुपति पुस्तक मेला, आंध्र प्रदेश	दिसंबर 2012
अगरतला पुस्तक मेला, त्रिपुरा	दिसंबर 2012
जलपाईगुड़ी पुस्तक मेला, प. बंगाल	फरवरी-मार्च, 2013
सिक्किम पुस्तक मेला, सिक्किम	मार्च 2013

'रिबेलियन 1857' के कन्नड़ अनुवादक को पुरस्कार

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित अँग्रेजी पुस्तक 'रिबेलियान 1857' के कन्नड़ अनुवाद को कर्नाटक स्टेट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान कर्नाटक सरकार के अधीन स्वायत्त प्राधिकरण, कुवेम्पु भाषा भारती प्राधिकारा द्वारा पुस्तक के कन्नड़ भाषा के अनुवादक मो. अब्दुल रहमान पाशा को सर्वश्रेष्ठ अनुवाद हेतु प्रदान किया गया। श्री पाशा अनुवादक होने के साथ-साथ लेखक एवं फिल्म निर्माता भी हैं।

चिट्ठीघर

संवाद जुलाई अंक। श्रीनगर पुस्तक मेला समेत अन्य पुस्तक मेलों तथा गतिविधियों को पढ़कर मन खुशी और आह्लाद से भर उठा। ट्रस्ट के नवीनतम प्रकाशनों से परिचय अच्छा लगता है। वस्तुतः **संवाद** का मिलना एक ताजगी से मिलने जैसा है।

शिव उदय भान सिंह चंदेल 'सार्थ', कानपुर, उ.प्र.

नवीनतम प्रकाशन के अंतर्गत विभिन्न विधाओं में प्रकाशित पुस्तकों की जानकारी मिली; साथ ही, अन्य प्रकाशनों की पुस्तकों की समीक्षा पढ़ने को मिली। उत्कृष्ट संपादन हेतु धन्यवाद! ट्रस्ट-निदेशक बाल साहित्य के एशियाई महोत्सव के सलाहकार समिति के सदस्य बने हैं, हार्दिक बधाई। **अशोक कुमार गुप्त,** कानपुर, उ.प्र.

संवाद जून अंक। शिमला, अहमदाबाद, गुड़गाँव तथा नाइजीरिया एवं तेहरान के पुस्तक मेलों की जानकारी तथा मुंबई एवं पुरी में ट्रस्ट की गतिविधियों को पढ़कर अच्छा लगा। पुस्तक समीक्षा एक उपयोगी उपक्रम है।

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

दिल्ली में एन.बी.टी का अन्य पुस्तक विक्रय केंद्र

4/5 बी, आसफ अली रोड
(निकट डिलाइट सिनेमा)
नई दिल्ली-110 002

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070